पुरुषोत्तम की षोडशोपचार पूजा

बृहन्नारदीय पुराण अंतर्गता

-: अनुवादक एवं संशोधक :-

डॉ. हर्षद सतासीया (वेदान्ताचार्य Ph.D.)

-: प्रकाशक :-

सहज आरोग्यम एवं मानव अभ्युदय संस्थान, वड़ोदरा

बृहन्नारदीय पुराण में पुरुषोत्तम मास माहात्म्य के २१ वे अध्याय में वाल्मीकि ऋषि ने अधिक मास में भगवान पुरुषोत्तम के षोडशोपचार पूजा की जो विधि बताई है वह यहां प्रस्तुत की गई है।

षोडशोपचार सनातन धर्म में देव-पूजन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और शास्त्रीय विधि है। 'षोडश' का अर्थ होता है १६ और 'उपचार' का अर्थ होता है सेवा या मान-सम्मान के तरीके अथवा सेवा के पदार्थ । अर्थात, भगवान की आराधना १६ विशिष्ट चरणों (सेवाओं) से करना। षोडशोपचार पूजन के अंतर्गत आने वाले १६ उपचार इस प्रकार है -

- **१. आवाहन:** पूजन के प्रारंभ में श्रद्धापूर्वक भगवान को प्रतिमा में विराजमान होने के लिए आमंत्रित करना।
- **२. आसन:** भगवान को विराजने के लिए आदरपूर्वक श्रेष्ठ स्थान (सिंहासन या आसन) समर्पित करना।
- **३. पाद्य:** भगवान के चरण (पैर) धोने के लिए जल अर्पित करना।
- **४. अर्घ्य:** भगवान के हाथ धुलवाने के लिए सुगन्धित पुष्प ,चंदन, और अक्षत (चावल) मिश्रित पवित्र जल अर्पित करना।
- **५. आचमन:** मुख शुद्धि और पीने के लिए जल अर्पित करना ।

- **६. स्नान:** भगवान को पंचामृत (दूध, दहीं, घी, शहद, शक्कर) शुद्ध जल, सुगन्धित जल एवं गंगाजल आदि से स्नान कराना।
- **७. वस्त्र:** स्नान के बाद भगवान को नए वस्त्र और उपवस्त्र (अंगवस्त्र) अर्पित करना।
- **८. यज्ञोपवीत:** भगवान को पवित्र जनेऊ अर्पित करना।
- **९. चंदन/अक्षत :** भगवान के मस्तक पर सुगंधित चंदन, कुमकुम या अष्टगंध का तिलक लगाना और अक्षत अर्पित करना ।
- **१०. पुष्प:** ऋतु अनुसार ताजे फूल और मालाएं अर्पित करना।
- **११. धूप:** सुगंधित धूप या अगरबत्ती जलाकर अर्पित करना।
- **१२. दीप:** भगवान के सामने शुद्ध घी या तेल का दीपक प्रज्वलित करके उन्हें अर्पित करना।
- **१३. नैवेद्य:** भगवान को सात्विक भोजन, फल, मिठाई या विशेष रूप से बनाया गया भोग अर्पित करना।
- **१४. ताम्बूल:** मुख शुद्धि और पाचन के लिए पान का बीड़ा (पान, सुपारी, लौंग, इलायची) भेंट करना।

- **१५. दक्षिणा और आरती:** पूजा की पूर्णता के लिए कुछ द्रव्य (सिक्के/धन) अर्पित करना और कपूर या घी के दीपक से भगवान की प्रेमपूर्वक आरती उतारना।
- **१६. प्रदक्षिणा/ नमस्कार/ मंत्रपुष्पांजलि/ क्षमायाचना:** भगवान की परिक्रमा करना, साष्टांग प्रणाम करना और हाथों में फूल लेकर मंत्रोच्चार के साथ अपनी प्रार्थना और भूल-चूक के लिए क्षमा मांगना।

विशेष ध्यान दें :- शास्त्रों में यह भी विधान है कि यदि किसी कारणवश पूजन की सामग्री उपलब्ध न हो, तो इन सभी उपचारों को 'मानस पूजा' (मन में कल्पना करके) या शुद्ध जल और अक्षत (चावल) के माध्यम से भावनापूर्वक भी अर्पित किया जा सकता है परन्तु धन का लोभ करके कभी मानस पूजन नहीं करना चाहिए ।

- डॉ. हर्षद सतासीया (वेदान्ताचार्य Ph.D.)

सर्वप्रथम स्नान आदि से पवित्र हो जाये। जब पुरुषोत्तमनारायण का पूजन करना हो तब श्री राधिका सहित पुरुषोत्तमनारायणकी प्रतिमाको अपने संमुख किसी काष्ठपीठ आदिपर यथाविधि स्थापित कर ले, अपने बैठनेका आसन भी लगा ले। पूजन आदिकी सभी सामग्रियोंको यथास्थान रखकर अपने आसनपर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठ जाय। दीपक जलाकर पूर्वाभिमुख रख दे और हाथ धो ले। 'दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते' कहकर पुष्प अर्पित कर कर्मसाक्षी दीपकका पूजन कर ले। तिलक लगा ले, तथा निम्न मन्त्रोंसे आचमन करे -

ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः ।
तथा ॐ हृषीकेशाय नमः कहकर हाथ धो ले।

निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर जल छिड़ककर मार्जन कर ले-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु , ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ,
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।

तदनन्तर दाहिने हाथमें जल, पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न संकल्प करे-

है पुरुषोत्तमनारायण में यथाशक्ति और यथा उपलब्ध उपचारों से आपका पूजन कर रहा /कर रही हूं इससे मुझे आपकी प्रसन्नता मुझे प्राप्त हो और आपकी कृपा से मेरा मनोरथ पूर्ण हो।

अब हाथमें लीया हुआ जल, पुष्प तथा अक्षत छोड़ दे।

कार्यकी निर्विघ्न सिद्धिके लिये श्रीगणेशजीका स्मरण कर ले।

(यहाँ से श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तमका पूजन शरु होता है ।)

➢ **ध्यान :-**

हाथ में पुष्प और अक्षत रखकर, हृदय में श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम का ध्यान करें -

श्रीवत्सवक्षसं शान्तं, नीलोत्पलदलच्छविम् ।

त्रिभङ्गललितं ध्यायेत्, स-राधं पुरुषोत्तमम् ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः, ध्यायामि

हाथ में रखे हुए अक्षत और पुष्प श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को अर्पित करें।

➢ **१. आवाहन :-**

हाथ जोड़कर मां राधिका सहित पुरुषोत्तम को आमंत्रित करें -

आगच्छ देव देवेश, श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम ।

राधया सहितश्चात्र, गृहाण पूजनं मम।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः, आवाहयामि

➢ २. आसन :-

हाथ में पुष्प और अक्षत रखकर, पूजा ग्रहण करने के लिए पधारे हुए श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को सुकोमल आसान देने की भावना करते हुए बोले-

नानारत्नसमायुक्तं, कार्तस्वरविभूषितम्।

आसनं देवदेवेश, गृहाण पुरुषोत्तम ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः, आसनं समर्पयामि,

अब आसन के लिए श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को पुष्प और अक्षत अर्पित करें।

➢ ३. पाद्य :-

चरण धोने के लिए शुद्ध जल लेकर यह मन्त्र बोले -

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो, मया प्रार्थनयाऽऽहृतम्।

तोयमेतत्सुखस्पर्शं, पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः, पाद्यं समर्पयामि

अब शुद्ध जल से श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम के चरण धोएं

➢ ४. अर्घ्य :-

श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम के हस्तकमलों को धुलवाने के लिए अर्घ्य (गंध पुष्प मिश्रित जल) लेकर बोले -

नन्दगोपगृहे जातो, गोपिकानन्दहेतवे।

गृहाणार्घ्यं मया दत्तं राधया सहितो हरे ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि

गन्ध-पुष्प मिश्रित जल श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम के हस्तकमलों में अर्पित करें

➢ ५. आचमन :-

श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को पीने योग्य शुद्ध जल लेकर यह मन्त्र बोले -

गङ्गाजलं समानीतं, सुवर्णकलशस्थितम्।

आचम्यतां हृषीकेश, पुराणपुरुषोत्तम ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि

अब पीने योग्य शुद्ध जल श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को अर्पित करें

➢ ६. पंचामृत स्नान :-

श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को स्नान-शाला में (जिसमे सुख पूर्वक स्नान किया जा सके एसे बड़े पात्र में) स्थापित कर निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए पंचामृत से स्नान कराये -

कार्यं मे सिद्धिमायातु, पूजिते त्वयि धातरि।

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं, राधिकासहितो हरे ।।

पयो दधि घृतं गव्यं, माक्षिकं शर्करा तथा ।

गृहाणेमानि द्रव्याणि, राधिकानन्ददायक ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि

➢ शुद्धोदक-स्नान :-

अब शुद्ध जल से निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को स्नान कराये -

योगेश्वराय देवाय, गोवर्धनधराय च।

यज्ञानां पतये नाथ, गोविन्दाय नमो नमः ।।

गङ्गा जलसमं शीतं, नदीतीर्थसमुद्भवम् ।

स्नानं दत्तं मया कृष्ण, गृह्यतां नन्दनन्दन ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः शुद्धोदक-स्नानं समर्पयामि

➢ ७. वस्त्र :-

पुरुषोत्तम नारायण के लिए वस्त्र और उपवस्त्र तथा श्रीराधिका के लिए साड़ी लेकर के यह मंत्र बोले -

पीताम्बरयुगं देव, सर्वकामार्थसिद्धये।

मया निवेदितं भक्त्या, गृहाण सुरसत्तम।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः वस्त्रं समर्पयामि

अब श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को वस्त्र समर्पित करें

➢ जलपान :-

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि

ऐसा बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को जलपान कराये

➢ ८. यज्ञोपवीत :-

हाथ में शुद्ध जल से प्रक्षालित की हुई यज्ञोपवीत लेकर -

दामोदर नमस्तेऽस्तु, त्राहि मां भवसागरात्।

ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं, गृहाण पुरुषोत्तम।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि

अब श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को यज्ञोपवीत अर्पित करें

- **जलपान :-**

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि

ऐसा बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को जलपान कराये

- **९. चन्दन :-**

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं, गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ, प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः चन्दनं समर्पयामि

ऐसा बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को चन्दन से अर्चित करें

- **अक्षत :-**

अक्षतास्तु सुरश्रेष्ठ, कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या, गृहाण पुरुषोत्तम ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः अक्षतान् समर्पयामि

ऐसा बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को अक्षत समर्पित करें

➢ १०. पुष्प :-

हाथ में ऋतु अनुसार प्राप्त विविध पुष्पों को रखकर निम्नलिखित मंत्र बोले -

माल्यादीनि सुगन्धीनि, मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पूजार्थं, पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः पुष्पाणि समर्पयामि

अब श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को विविध पुष्प समर्पित करें

➢ अङ्गपूजा :-

बाएं हाथ में अक्षत रखें और भगवान के जिस अंग का नामोच्चारण हो उस अंग की, पूजयामि बोलने के बाद अक्षत से पूजा करें -

नन्दात्मजाय नम: पादौ पूजयामि (चरणों की पूजा करें)

यशोदातनयाय नम: गुल्फौ पूजयामि (टखनों की पूजा करें)

केशिसूदनाय नम: जानू पूजयामि (घुटनों की पूजा करें)

भूभारोत्तारकाय नम: जघने पूजयामि (जांघों की पूजा करें)

अनन्ताय नम: कटी पूजयामि (कमर की पूजा करें)

विष्णुरूपधृषे नम: मेढ्रं पूजयामि (गुप्तांग की पूजा करें)

प्रद्युम्नाय नम: नाभिं पूजयामि (नाभि की पूजा करें)

अनिरुद्धाय नम: हृदयं पूजयामि (हृदय की पूजा करें)

श्रीकण्ठाय नम: कण्ठं पूजयामि (कण्ठ की पूजा करें)

सकलास्त्रधृषे नम: बाहू पूजयामि (हाथों की पूजा करें)

वाचस्पतये नम: मुखं पूजयामि (मुख की पूजा करें)

केशवाय नम: नेत्रे पूजयामि (नेत्रों की पूजा करें)

सर्वात्मने नम: शिर: पूजयामि (मस्तक की पूजा करें)

विश्वरूपिणे नम: सर्वाङ्गानि पूजयामि (सभी अंगो की पूजा करें)

पुनः निम्न लिखित एक एक मंत्र के साथ पुष्प से श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम की पूजा करें।

१. ॐ केशवाय नमः

२. ॐ नारायणाय नमः

३. ॐ माधवाय नमः

४. ॐ गोविन्दाय नमः

५. ॐ विष्णवे नमः

६. ॐ मधुसूदनाय नमः

७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः

८. ॐ वामनाय नमः

९. ॐ श्रीधराय नमः

१०. ॐ हृषीकेशाय नमः

११. ॐ पद्मनाभाय नमः

१२. ॐ दामोदराय नमः

१३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः

१४. ॐ वासुदेवाय नमः

१५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः

१६. ॐ अनिरुद्धाय नमः

१७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः

१८. ॐ अधोक्षजाय नमः

१९. ॐ नारसिंहाय नमः

२०. ॐ अच्युताय नमः

२१. ॐ जनार्दनाय नमः

२२. ॐ उपेन्द्राय नमः

२३. ॐ हरये नमः

२४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

- **११. धूप :-**

निम्नलिखित मंत्र बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को धूप अर्पित करें -

वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः धूपमाघ्रापयामि

➢ १२. दीप :-

निम्नलिखित मंत्र बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को दीप अर्पित करें -

त्वं ज्योतिः सर्व देवानां तेजसां तेज उत्तमम्।

आत्मज्योतिः परं धाम दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः दीपं दर्शयामि

➢ १३. नैवेद्य :-

निम्नलिखित मंत्र बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को नैवेद्य (भोग) अर्पित करें -

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं में ह्यचलां कुरु।

ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि

मध्ये पानीयं समर्पयामि

ऐसा कहकर भोजन के मध्य में शुद्ध जल अर्पित करें और फिर से भोजन कराये

निम्न लिखित मन्त्र से भोजन के अन्त में शुद्ध जल अर्पित करें

गङ्गाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्।
आचम्यतां हृषीकेश त्रैलोक्यव्याधिनाशन।।
श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः आचमनीयं समर्पयामि

उत्तरापोशनं समर्पयामि
मुख प्रक्षालानं समर्पयामि
ऐसा कहकर दो बार शुद्ध जल अर्पित करें

➢ **फलार्ध्य :-**

निम्नलिखित मंत्र बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को विविध फल / सूखे मेवे और श्रीफल अर्पित करें
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ।।
श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः फलार्ध्य समर्पयामि

➢ **करोद्वर्तनम् :-**

निम्नलिखित मंत्र बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को हाथ धुलवाने के लिए सुगन्धित जल अर्पित करें

गन्धकर्पूरसंयुक्तं, कस्तूर्यादिसुवासितम्।

करोद्वर्तनकंदेव, गृहाण परमेश्वर ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः करोद्वर्तनं समर्पयामि

- **१४. ताम्बूल :-**

निम्नलिखित मंत्र बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को मीठा पान अर्पित करें

पूगीफलसमायुक्तं सकर्पूरं मनोहरम्।

भक्त्या दत्तं मया देव ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि

- **१५. दक्षिणा :-**

निम्नलिखित मंत्र बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को दक्षिणा अर्पित करें

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः दक्षिणां समर्पयामि

➢ नीराजन (आरती) :-

निम्नलिखित मंत्र से और परंपरागत जो आरती गाई जाती है उसे गाकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम की महा आरती करें

शारदेन्दीवरश्यामं त्रिभङ्गललिताकृतिम्।

नीराजयामि देवेशं राधया सहितं हरिम् ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः नीराजनं समर्पयामि

➢ १६. प्रदक्षिणा :-

निम्नलिखित मंत्र बोलकर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम की प्रदक्षिणा करें

रक्ष रक्ष जगन्नाथ रक्ष त्रैलोक्यनायक।

भक्तानुग्रहकर्ता त्वं गृहाणेमां प्रदक्षिणाम् ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि

➢ मन्त्रपुष्पाञ्जलि :-

दोनों हाथों की अंजलि बनाकर, उसमें फूल रखकर, निम्नलिखित मंत्र बोल कर श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तम को पुष्पांजलि अर्पित करें

यज्ञेश्वराय देवाय तथा यज्ञोद्भवाय च।

यज्ञानां पतये नाथ गोविन्दाय नमो नमः ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि

➢ नमस्कार :-

निम्नलिखित मंत्र बोलकर यथाशक्ति पुरुष साष्टांग प्रणाम और स्त्री पंचांग प्रणाम करें

विश्वेश्वराय विश्वाय तथा विश्वोद्भवाय च।

विश्वस्य पतये तुभ्यं गोविन्दाय नमो नमः ।।

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः नमस्कारान् समर्पयामि

➢ क्षमायाचना :-

किए गए पूजन में कोई क्षति रह गई हो या कोई भूल हुई हो तो उसके निवारण के लिए निम्नलिखित मित्रों से क्षमा याचना करें

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।

दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।

पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ।

यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ।

आगता सुखसम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात् ॥

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः क्षमापनं समर्पयामि

- **संपूर्णता सिद्धि के लिए वंदना :-**

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

श्रीराधिका-सहित-पुरुषोत्तमाय नमः नमस्कारान् समर्पयामि

****

विशेष :-

स्वाहान्तैर्नाममन्त्रैश्च तिलहोमो दिने दिने । ४४।
दीपः कार्यस्त्वखण्डश्च यावन्मासं च सर्पिषा ।
पुरुषोत्तमस्य प्रीत्यर्थं सर्वाथफलसिद्धये ।४५ ।

ऋषि वाल्मीकि के आदेश अनुसार - पुरुषोत्तम मास में ऐसा पूजन करने के पश्चात 'ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा' इस मंत्र से हर रोज यथाशक्ति तिल से हवन करना चाहिए और पुरुषोत्तम की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए और सभी इच्छित मनोरथ की पूर्णता के लिए पुरुषोत्तम के पास घी का अखंड दीप करना चाहिए।